पर्याय-शब्दों में सूक्ष्मान्तर

· **अन्वेषण, अनुसन्धान, आविष्कार** (MPPCS 2003,06)

अन्वेषण- आविष्कार की सफलता के प्रयत्न का नाम अन्वेषण है जैसे- जगदीश चन्द्र बसु सदैव अन्वेषण कार्य में लगे रहे।

अनुसन्धान- लुप्त एवं सूक्ष्म विषय के व्यवस्थित ढंग से अध्ययन एवं अन्वेषण का नाम अनुसन्धान है। अनुसन्धान में खोजी जाने वाली वस्तु का अस्तित्व होता है किन्तु उसका ज्ञान नहीं रहता (अनुसन्धान को 'शोध' एवं 'गवेषणा' भी कहते हैं।)

जैसे- 'कल जो हमारी सभ्यता पर थे हँसे अज्ञान से,
वे आज लज्जित हो रहे हैं अधिक अनुसन्धान से।'
(मैथिलीशरण गुप्त)

आविष्कार - अन्वेषण की सफलता आविष्कार है। जैसे- 18 वीं सदी के अन्तिम भाग में बैलून यानी गुब्बारे का आविष्कार हुआ।

· **अज्ञ, मूर्ख, मूढ़**

अज्ञ- जड़ बुद्धि वाले को अज्ञ-कहते हैं। जैसे-
'कुछ वेष की भी लाज रखो अज्ञता का अन्त हो,
भर कर न केवल उदर ही तुम लोग पूरे सन्त हो।'

मूर्ख - जिसे हिताहित का ज्ञान न हो, उसे मूर्ख कहते हैं। जैसे-
एक मूर्ख निज-वृद्ध पिता को खूब मार रहा था।

मूढ़- अत्यधिक मूर्ख। जैसे- हम उसे इतना मूढ़ नहीं समझते थे।

अज्ञान, अनजान, अनभिज्ञ

अज्ञान- जिसमें स्वाभाविक बुद्धि ही न हो, उसे अज्ञान कहते हैं। जैसे- परिवार नियोजन के प्रति लोगों की अज्ञानता ही जनसंख्या विस्फोट की सबसे बड़ी वजह है।

अनजान जिसे समझने का अवसर न मिला हो। जैसे-
भाई! सूक्ष्म जगत् की बातों से तो मैं अनजान हूँ।
अनभिज्ञ- अनभिज्ञ का अर्थ है जिसकी जानकारी न हो।
जैसे- जीवन में आने वाले तूफान से मैं अनभिज्ञ था।

· ***अलौकिक, अस्वाभाविक, असाधारण***

अलौकिक- *जो बात इस संसार में तथा समाज में पहले न देखी गयी हो, उसे अलौकिक कहते हैं। जैसे- ऐसी अलौकिक तपस्या करने के कारण अर्जुन के मन में न कभी गर्व ही का अंकुर उत्पन्न हुआ और न कभी विस्मय ही को स्थान मिला।*
अस्वाभाविक- *जो बात सृष्टि नियम के प्रतिकूल होती है, उसे विद्वज्जन अस्वाभाविक कहते हैं। अलौकिक अस्वाभाविक हो सकता है, किन्तु अस्वाभाविक अलैकिक नहीं हो सकता। जैसे- मित्रवर ! क्या कहते हो यह बात अस्वाभाविक है, कभी हो नहीं सकती।*
असाधारण *- जो साधारण नहीं हो। जैसे शेर को मारकर उसने असाधारण शौर्य का परिचय दिया।*

· ***अवस्था, परिस्थिति, स्थिति***

अवस्था- *अवस्था से अभिप्राय ऐसी स्थिति से है जो सामान्यतः जल्दी बदल जाती है।*

जैसे अवस्था के ही कारण वस्तुओं का संकोच अथवा विस्तार होता है।

परिस्थिति- *परिस्थिति का प्रयोग बाहरी बातों के संयोग से बनने वाली स्थिति के लिए किया जाता है।*

जैसे विषम परिस्थितियों में पड़कर भी उसने धैर्य का परित्याग नहीं किया।

स्थिति- *स्थिति से अभिप्राय ऐसी स्थिति से है जो सामान्यतः जल्दी नहीं बदलती है। जैसे तत्कालीन समाज की स्थिति बहुत ही दयनीय थी।*

· ***अद्भुत, विस्मयजनक, आश्चर्यजनक, विचित्र***

अद्भुत *- आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता के होने पर भी हम जिसके रहस्य को न जान पाएँ। जैसे आगरे का ताजमहल सदा अद्भुत रहेगा।*

विस्मयजनक - *विस्मयजनक में विस्मय का भाव अधिक है। किसी वस्तु की विस्मयकारी शक्ति या गुण क्षणिक या अस्थायी होती है।*

जैसे- *अद्भुत कोई व्यापार या कृति होती है और हमारे मन पर उसका जो परिणाम या प्रभाव प्राप्त होता है, वह विस्मय जनक होता है।*

आश्चर्यजनक *- जब कोई विलक्षण बात सहसा या अप्रत्यशित रूप से घटित हो तो वह आश्चर्यजनक होगी।*

जैसे- किसी महान व्यक्ति का बच्चों के साथ खेलना आश्चर्य जनक होगा।

विचित्र *- सामान्य रूप से चकित करने वाला जैसे- हमारे मित्र का स्वभाव बड़ा विचित्र हो गया है।*

· ***अदृश्य, अलक्षित, अस्पष्ट***

अदृश्य *- जो सामने या आसपास कहीं हो तो सही पर इधर-उधर हो जाने से आँखों से ओझल हो गया हो।*

जैसे- अभी तक तो यहीं खड़ा था, लेकिन भीड़ में अदृश्य हो गया।

अलक्षित *- कहीं कोई काम हो रहा हो, किन्तु वह हमारे लक्ष्य में न आवे।*

जैसे- *दूरदर्शन टीम के कैमरा मैन कहने लगे, कि स्नान क्षेत्र भीड़ के कारण अलक्षित हो रहा है।*

अस्पष्ट - *जो सामने हो किन्तु ठीक तरह से पूरा-पूरा दिखाई न पड़े, वह अस्पष्ट कहलायेगा। जैसे दीवानजी की लिखावट अस्पष्ट है।*

· ***अभियोजन, परिवाद, दोषारोपण, शिकायत, चुगली, उपालम्भ***

अभियोजन *- किसी पर अभियोग लगाना जैसे- माननीय जज ने सबसे पहले अभियोजन पक्ष की दलील सुनी।*

परिवाद- *परिवाद में किसी बात या व्यवहार के प्रति असंतोष व्यक्त किया जाता है जिसमें स्वार्थ रक्षा की भावना रहती है, दण्ड दिलाने की नहीं।*

जैसे-मनोज के परिवाद को वरीय अधिकारी ने ध्यानपूर्वक सुना।

दोषारोपण- *किसी पर आरोप लगाना। जैसे- चुनाव नजदीक देखकर विपक्षी दल द्वारा मेरे ऊपर गलत दोषारोपण हुआ है।*

शिकायत - *दूसरों से तथा स्वयं उस व्यक्ति से भी असंतोष प्रकट करना जिसके कारण कष्ट हो।*

जैसे- देवरानी के दुर्व्यवहार की शिकायत मैंने अपनी सास से कर दी।

चुगली - *किसी की अनुपस्थिति में उसके प्रति आक्षेप लगाना। जैसे- मनोहर की एक बुरी आदत है कि वह सबकी चुगली करता रहता है।*

उपालम्भ- *शिकायत का हल्का स्वरूप जिसकी शब्दावली मधुर एवं व्यंगात्मक होती है। जैसे मधुकर ने उपालम्भ द्वारा अपने बड़ों तक बात पहुँचायी।*

· ***अमूल्य, बहुमूल्य, दुर्मूल्य***

अमूल्य - *जो वस्तु मूल्य देने से भी न मिल सके, वह अमूल्य है। जैसे- इस संसार में विद्या और यश अमूल्य हैं। ये बड़े भाग्य से प्राप्त होते हैं।*

बहुमूल्य - *जिस वस्तु का मूल्य अत्यधिक होता है, उसे बहुमूल्य कहते हैं। जैसे- अकाल पड़ने पर अन्न बहुमूल्य हो जाता है।*

दुर्मूल्य - *कीमत से अधिक मूल्य (अनुचित मूल्य)। जैसे- अकाल के समय अन्न को छिपाकर, उसका भण्डारण एवं कालाबाजारी करके मिला लाभ दुर्मूल्य है।*

(नोट - छुपाकर एवं छिपाकर दोनों शुद्ध हैं।)

· ***अभिमान, अहंकार, दंभ***

अभिमान- *अपने सम्मान का यथोचित ज्ञान अभिमान है। जैसे- हमें अपनी संस्कृति पर अभिमान होना चाहिए।*

अहंकार- *अपने निजत्व को आवश्यकता से अधिक चेतना अहंकार कहलाता है। जैसे व्यक्तिगत जीवन में अहंकार की भावना से दूर रहना शिष्ट व्यक्ति का लक्षण है।*

दंभ *- अयोग्य होते हुए भी दिखावा करना। जैसे उसे संगीतकार होने का दंभ हो गया है।*

· ***अपराध, पाप, दोष***

अपराध – *वह कार्य जो विधि विरुद्ध हो। जैसे- किसी वस्तु को चुराना एक अपराध है।*

पाप *- धर्म सम्बन्धी नियमों की अवहेलना करना। जैसे- हिंसा करना पाप है।*

दोष- *लौकिक क्षेत्र में हर तरह के अवगुण और बुराई हैं। जैसे- आँखों से ठीक प्रकार से न दिखाई देना ही दृष्टि दोष है।*

· ***अपमान, अवमान, अवज्ञा***

अपमान*- मान या प्रतिष्ठा नष्ट होना। जैसे- सभास्थल पर ही लोगों ने अध्यक्ष का अपमान किया।*

अवमान*- उचित आदर न मिलना। जैसे गुरु जी को खड़े रखकर शिष्यों ने उनका अवमान किया।*

अवज्ञा- *किसी बात को अपमान जनक समझकर विरोध प्रकट करने के उद्देश्य से उसकी ओर ध्यान न देना।*

जैसे- सरकारी दुकानदार ने आपूर्ति अधिकारी के आदेश की अवज्ञा की।

· ***अगम, दुर्गम, आगम***

अगम*- जिसमें किसी तरह गमन न हो सके। जैसे- हे प्रभु! तुम्हारी माया अगम्य है, इसका पार पाना असम्भव है।*

दुर्गम*- जिसमें कठिनाई से गमन किया जा सके। जैसे- पहाड़ी मार्ग बड़े दुर्गम हैं, इनसे होकर जाना आसान नहीं।*

आगम*- शास्त्र। जैसे- आगम, निगम, पुराण सब धार्मिक, ग्रंथ हैं।*

· ***अनुकम्पा, दया, करुणा, कृपा, अनुग्रह***

(UPPCS.:73)

अनुकम्पा *- पर दुःख से उत्पन्न दुःख का नाम अनुकम्पा है। जैसे- दीन दुखियों की अवस्था को देख, अनुकम्पा उत्पन्न होती है।*

दया- *दूसरों के दुःख को दूर करने की अस्वाभाविक इच्छा का नाम दया है।*

करुणा- *पर दुःख दूर करने की आकुलता का नाम करुणा है। जैसे- अब नाथ करि करुणा विलोकहु, देहु, जो बर माँगही। (तुलसी)*

कृपा *- किसी के कहने से दुःख दूर करने के लिए उत्पन्न भाव कृपा है। इसका प्रयोग अधिकतर छोटों के प्रति दया प्रकाशन के रूप में होता है।*

जैसे- *जाहि दीन नेह करहु कृपा मरदनमयन।*

(तुलसी)

अनुग्रह- *इष्ट-सम्पादन को अनुग्रह कहते हैं। जैसे- तुम्हारे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं। (तुलसी)*

· ***अलौकिक, अपूर्व, निराला, चमत्कारिक, लोकोत्तर, स्वर्गीय***

अलौकिक- *जिसमें इस लोक में प्राप्त होने वाली वस्तु से अधिक विशिष्ट गुण दिखाई पड़े।*

जैसे- यह अलौकिक औषधि है जो पेट की सभी बिमारियों में रामबाण साबित होगा।

अपूर्व- *जो पहले कभी न रहा हो या हुआ हो। जैसे- इस अपूर्व घोषणा से सभी का दिल खुश हो गया।*

निराला- *जो अपने रूप, गुण आदि से अपने वर्ग या जाति में सबसे अलग प्रतीत हो वह निराला कहलाता है।*

जैसे- *सभागार में अपनी अलग वेष भूषा के कारण वह सबसे निराला लग रहा था।*

चमत्कारिक *- जिस वस्तु की विलक्षणता और विचित्रता के कारण हमारा कौतुहल जागृत हो जाय वह चमत्कारिक कहलाता है।*

जैसे- जो औषधि तुमने मुझे दी थी वह चमत्कारिक सिद्ध हुई।

लोकोत्तर- *जो इस लोक में सामान्यतः प्राप्त न हो। जैसे- मोहन भाग्यशाली है जो लोकोत्तर सुख भोग रहा है।*

स्वर्गीय *- स्वर्ग के सुख के समान। जैसे- जो सुख एवं आराम मुझे मिल रहा है वह स्वर्गीय सुख की अनुभूति प्रदान कर रहा है।*

· ***आश्चर्य, चमत्कार, विस्मय***

आश्चर्य *- अप्रत्याशित वस्तु के घटित होने पर मन के भाव। जैसे- उस आवारा का उत्तीर्ण होना सुनकर मैं आश्चर्य चकित रह गया।*

चमत्कार- *आश्चर्य जनक एवं सराहनीय चीजें। जैसे- वैज्ञानिक चमत्कारों की आधुनिक युग में धूम मची हुई है।*

विस्मय *- अत्यंत ही असमंजस्य में पड़ जाना। जैसे- लेत चाप आपुहि चलि गयऊ, परशुराम मन विस्मय भयऊ।*

· ***उत्साह, उद्योग, उद्यम, प्रयास, चेष्टा***

उत्साह- *कार्य करने की उमंग का नाम उत्साह है।*

जैसे- कार्य-सिद्धि के लिए उत्साह की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी कि पुस्तकों को पढ़ने के लिए वर्णमाला की।

उद्योग- *कार्य में लग पड़ने का नाम उद्योग है। जैसे- मित्र! उद्योग कर रहा हूँ, फल परमात्मा के हाथ है।*

उद्यम *- उद्यम सदा महत्त्वपूर्ण कार्य की सिद्धि या इष्ट फल की प्राप्ति हेतु किया जाता है। जैसे उद्यमी व्यक्ति जीवन में हमेशा सफल रहता है।*

प्रयास *- सफलता के निकटस्थ उद्यम का नाम प्रयास है। जैसे- भाई ! प्रयास करते चलो, सफलता निकट है।*

चेष्टा- *किसी कार्य का वहिरंग प्रयत्न, जिसमें शारीरिक दृष्टि से कुछ करने का भाव निहित होता है चेष्टा कहलाता है।*

जैसे- अजी! तुम चेष्टा करो, कार्य निश्चय पूर्ण होगा।

- ***कोकनद, पुण्डरीक (अरविन्द), जलज, इन्दीवर***

कोकनद- *अरुण (लाल) कमल को कहते हैं। जैसे- कोकनद-पद हिय आनि के जुड़ाइये (भूषण)*

पुण्डरीक (अरविन्द) - *श्वेत कमल को कहते हैं। जैसे- पुष्कर में पुण्डरीक की शोभा ऐसी जान पड़ती है, जैसे आकाश में नक्षत्र-गण।*

जलज- *साधारणतः सभी कमल का नाम जलज है। जैसे- गाँव के तालाब में जलज खिलकर अनोखी छटा बिखेर रहे हैं।*

इन्दीवर (नीलोत्पल) - *श्याम (नील) कमल का नाम है। जैसे- श्याम कमल को इन्दीवर कहते हैं और ये कम दिखते हैं।*

· ***कटाक्ष, व्यंग्य, ताना, चुटकी, उपहास***

कटाक्ष- *ऐसी व्यंग्यपूर्ण उक्ति जिसका उद्देश्य किसी पर कुछ आक्षेप करके उसे खिन्न, लज्जित और नीचा दिखाना होता है।*

जैसे- संसद में आज दिन भर विपक्षी, नेताओं ने तहलका प्रकरण लेकर सत्तापक्ष पर कटाक्ष किया।

व्यंग्य- *किसी को दुःखी करने, चिढ़ाने या नीचा दिखाने के उद्देश्य से अस्पष्ट शब्दों में बात कहना।*

जैसे- आपकी ये व्यंग्यपूर्ण बातें अच्छी नहीं लगती हैं।

चुटकी- *व्यंग का हल्का रूप जिसका उद्देश्य सम्बन्धित व्यक्ति को लज्जित करना होता है, दुःखी करना अथवा हानि पहुँचाना नहीं।*

जैसे- *वह उसकी बात तो सुन रहा था लेकिन बीच-बीच में चुटकी भी ले रहा था।*

ताना- *ऐसा आक्षेप पूर्ण व्यंग्य जो किसी के द्वारा किए गये कार्य या स्थिति से कुछ लज्जित करे। जैसे पड़ोसन द्वारा रोज ताना देने से मैं ऊब चुकी हूँ।*

उपहास - *किसी को नीचा एवं तुच्छ दिखाने के उद्देश्य से उड़ाई गई खिल्ली जिसमें हानि अथवा निन्दा का प्रयोजन नहीं होता।*

जैसे- वह अपनी बड़ाई खूब बढ़ा-चढ़ा कर कर रहा था इस बात से अनजान कि बाद में सब उसका उपहास करेंगे।

· ***क्रोध, अप्रसन्नता, रोष***

क्रोध*- वह भाव जो किसी के द्वारा नुकसान एवं गलत कार्य करने वाले के प्रति होता है।*

जैसे- उसने मेरे पैर को चोट पहुँचाई अतः मुझे उस पर क्रोध आ गया।

अप्रसन्नता*- इच्छा के विरुद्ध कार्य होने पर उत्पन्न होने वाला मनोभाव।*

जैसे- समय पर न पहुँचने पर निदेशक जी ने अपने कर्मचारी के प्रति अप्रसन्नता प्रकट की।

रोष- *क्रोध का ही थोड़ा हल्का रूप जो प्रत्यक्ष में व्यक्त नहीं होता। जैसे- मुझे उसके व्यवहार के प्रति रोष है।*

· ***कलह, झगड़ा, विवाद, संघर्ष***

कलह*- आपसी राग, द्वेष के कारण लड़ाई-झगड़ा। जैसे- वह तो स्वभाव से शान्तिप्रिय है, उसके विषय में कलह की बात करना यथोचित नहीं लगता।*

झगड़ा*- दूसरे को दोषी ठहराते हुए अपना पक्ष ठीक और न्याय संगत सिद्ध करें तो उसे झगड़ा कहते हैं।*

जैसे- अपने को न्याय संगत समझकर बेकार में उससे झगड़ा मोल ले लिए।

विवाद*- जिन बातों का स्वरूप अनिश्चित और अस्थिर होता है।*

जैसे*- सभ्य लोगों का मतभेद सैद्धान्तिक होने के कारण उनका विवाद शिष्टतापूर्ण होता है।*

संघर्ष*- यदि झगड़ा शान्त नहीं होता और लम्बा खिंचता है तो वह संघर्ष कहलाता है जिसमें अस्तित्व रक्षा का प्रश्न सम्मिलित रहता है।*

जैसे- यह हत्या दो परिवारों के बीच लम्बे संघर्ष का परिणाम है।

• ***कुटी, घर, मकान, प्रासाद***

कुटी- *तपस्वी, साधु अपने रहने के लिए जो स्थान बनाते हैं, वह कुटी, कुटीर आदि नामों से पुकारा जाता है।*

जैसे वाल्मिकी ऋ षि अपने कुटी में विश्राम कर रहे थे।

घर- *साधारतया मनुष्य अपने रहने के लिए जो निर्माण करता है वह घर कहलाता है। जैसे मेरे घर के सामने नगर प्रमुख का कार्यालय है।*

मकान- *ईंट, गारे का निर्माण जिसमें कोई रह न रहा हो मकान कहलाता है। जैसे सरकार ने गरीबों को पक्के मकान बनवाकर देने का वादा किया।*

प्रासाद- *राजा-महराजा का भवन प्रासाद कहलाता है। जैसे- राज प्रासाद में सेवकों की आवाजाही रहती है।*

· ***कुतुहलजनक, अनोखा या अनूठा, विचित्र, विलक्षण, अद्वितीय या अनुपम***

कुतुहलजनक *- जो वस्तु या व्यक्ति अपने कार्य, बनावट अथवा रूप विशेष के कारण मन में कुछ उत्सुकता और जिज्ञाषा का भाव उत्पन्न करे वही*

कुतूहलजनक है। जैसे दिल्ली स्थित कुतुबमीनार आज भी कुतूहलजनक है।

अनोखा या अनूठा *- जिस व्यक्ति या वस्तु में अपनी संपूर्ण जाति अथवा वर्ग की अपेक्षा विशिष्टता अथवा आकर्षणशीलता हो वह अनूठा या अनोखा कहलाता है। जैसे शाहजहाँ द्वारा निर्मित ताजमहल आज भी वास्तुकला का अनूठा नमूना है।*

विचित्र- *जो अपने विविध गुणों के कारण मन को चमत्कृत करे, वही विचित्र है। इसमें रहस्यात्मकता का भाव विद्यमान रहता है।*

जैसे- जंगल में गुजरते समय शिकारी ने विचित्र जीव देखा।

विलक्षण- *जो व्यक्ति या वस्तु अपनी मौलिक विशेषता या विशेषताओं के कारण हमारा ध्यान अन्य व्यक्ति या वस्तुओं की अपेक्षा पहले आकृष्ट करे*

वह विलक्षण है। विलक्षण में कुतूहल का भाव अपेक्षाकृत अधिक होता है।

जैसे- बालक हनुमान ने अपने प्रारम्भिक काल में ही विलक्षण प्रतिभा का परिचय दे दिया था।

अद्वितीय या अनुपम- *जिसकी समानता कोई दूसरा न कर पाए अथवा उसके जैसा काई दूसरा न हो अद्वितीय या अनुपम कहलाता है।*

जैसे-वीर एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य के आदेश पर अपने दायें हाथ का अँगूठा काटकर गुरुभक्ति का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

· ***कविता, काव्य, पद्य***

कविता- *जब सुन्दर भाव, विचार या कल्पनाएँ कलात्मक ढंग से छन्दोबद्ध, लय-युक्त, संगीतमय भाषा में गूँथी जाती हैं तो उस साहित्यिक रचना को*

कविता कहते हैं। जैसे- जगदीश गुप्त और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना नयी कविता के प्रतिनिधि कवि हैं।

काव्य- *कुछ विशिष्ट प्रकार और विषय की क्रमबद्ध रचनाओं का ग्रंथ के रूप में संग्रह काव्य है।*

जैसे प्रगतिमयता छायावादी काव्य की मुख्य विशेषता है।

पद्य *- छंदो के पदों से युक्त रचनाएँ पद्य कहलाती हैं। जैसे-* ***छप्पय और कुंडलियाँ पद्य*** *हैं।*

- ***चरित्र, आचरण, चरित***

चरित्र *- मनुष्य के कार्य और स्वभाव का समन्वित रूप चरित्र है।*

जैसे- इतने सच्चरित्र होते हुए भी उन्होंने इस अवसर पर ऐसा निन्दित आचरण क्यों किया?

आचरण- *व्यवहार और आचार के अर्थ में आचरण का प्रयोग होता है।*

जैसे चरित्र आचरण से कहीं अधिक ऊँचा है तथापि मनुष्य को अपने आचरण का ध्यान रखना चाहिए।

चरित- *चरित का अर्थ जीवनी से होता है।*

जैसे- गोस्वामी तुलसी दास ने राम चरितमानस में राम के चरित में लोकानुरुष्ठजक गुणों का बहुत ही सुन्दर ढंग से निरूपण किया है।

· ***तट, पुलिन, तीर, किनारा***

तट- *जलाशय एवं नदी के निकट की सूखी जमीन। जैसे- गंगा के तट पर छठ की पूजा दर्शनीय होती है।*

पुलिन- *जलाशय एवं नदी के निकट की गीली जमीन। जैसे- पुलिन अक्सर दल-दली जमीन होती है।*

तीर- *जलाशय के निकट जल को स्पर्श करने वाली जमीन। जैसे- स्नान करने के लिए गंगा में प्रवेश करने के पूर्व मैंने गंगाजी के तीर को स्पर्श किया।*

किनारा- *जलाशय एवं नदी के पास उठा हुआ हिस्सा। जैसे- गंगाजी के किनारे कई मन्दिर हैं जो श्रद्धालुओं के आकर्षण का केन्द्र हैं।*

· ***दुःख, कष्ट, शोक, क्षोभ, खेद, विषाद, व्यथा, क्लेश, सन्ताप, पीड़ा, वेदना***

दुःख- *मन की व्यग्रता का नाम दुःख है। जैसे यह सुनकर कि वे मुझसे घृणा करते हैं, मेरे मन में विशेष दुःख हुआ है।*

कष्ट- *कष्ट प्रायः शारीरिक बातों से सम्बन्ध रखता है किन्तु अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए भी इसका प्रयोग होता है।*

जैसे- ***'दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही।'***

(निराला)

शोक- *चित्त की व्याकुलता शोक है। जैसे- 'मिलती यह थी स्वकोक से। हत कोकी वच दुःख-शोक से।।'*

क्षोभ - *अभीष्ट पदार्थ प्राप्त न होने पर जो व्यग्रता होती है, उसका नाम क्षोभ है।*

जैसे- मेरी साधना पूर्ण नहीं होती; मन में विकारों का समावेश होता ही चला जा रहा है, इसका मुझे बड़ा क्षोभ है, लेकिन क्या करूँ, वश नहीं चलता।

'सुनो, किन्तु है लोभ संसार में।
इसी हेतु है क्षोभ संसार में।।'

(साकेत : 306)

खेद- *निराशा की अवस्था में जो व्यग्रता होती है, उसका नाम खेद है।*

जैसे खेद है नाथ! अब तक आप नहीं आये। भला ये कैसा अनुराग है, जो बराबर कष्ट देता रहता है।

विषाद- दुःख की विशेषता मे कर्त्तव्य-ज्ञान का नष्ट होना विषाद है। जैसे-

'पैठ्यो हमें भुआल तात सुधि लेन तिहारी।
कहै कहाँ संवाद जाइ हम मर्म विदारी।
सुनतहिं ताकी कौन दशा दारुन है जैं हैं।
सुमति-केसिनी को विषाद मर जाद नसैं हैं।।'

व्यथा- रह-रह कर मन में उठने वाली टीस व्यथा है। जैसे- अपनी व्यथा मैं किसे बताऊँ ?

क्लेश- दुःख का हलका रूप क्लेश है। जैसे इस बात का क्लेश है कि समय पर मैं आपकी आर्थिक सहायता नहीं कर पाया।

पीड़ा- इसका प्रयोग मुख्य रूप से शारीरिक एवं गौण रूप से मानसिक क्षेत्र में होता है।

जैसे आज दिन भर इतनी दौड़ धूप हो गयी कि शरीर के हर जोड़ में पीड़ा हो रही है।

वेदना- मानसिक पीड़ा जब उग्र रूप धारण करती है तब वेदना कहलाती है।

जैसे- नायिका के विरह की वेदना का चित्रण कवि ने बड़े ही अच्छे ढंग से किया है।

सन्ताप- वेदना या व्यथा के उग्र रूप धारण करके स्थायी होकर कुछ समय तक मन में रहने के कारण उत्पन्न भाव सन्ताप है।

जैसे- पुत्र वियोग के सन्ताप से वह ग्रसित है।

• दुराचार, अनाचार, भ्रष्टाचार

दुराचार - दुष्कर्मों का बराबर आचरण दुराचार है। जैसे- दुराचारी से दूर रहो।

अनाचार - चरित्र की दुर्बलता के कारण नीति विरुद्ध आचरण अनाचार है। जैसे- रास्ते में लड़कियों को छेड़ना अनाचार है।

भ्रष्टाचार- *आर्थिक स्वार्थ की दृष्टि से अनेक प्रकार की बेईमानी, अन्याय तथा अपने सगे-सम्बन्धियों को आर्थिक लाभ पहुँचाने के लिए अनेक प्रकार के पक्षपात पूर्ण कार्य भ्रष्टाचार हैं। जैसे- रिश्वत लेना घोर भ्रष्टाचार है।*

· ***दृष्टान्त, उदाहरण, निदर्शन***

दृष्टान्त- *किसी बात के खण्डन में प्रमाण रूपी उसी के समान कोई बात कहना।*

जैसे तहलका प्रकरण में कहा जाने वाला यह तथ्य दृष्टान्त ही कहलाएगा।

उदाहरण- *किसी नियम, सिद्धान्त, स्थिति आदि का ठीक-ठीक रूप बतलाने के लिए हम जो तथ्य दृष्टान्त के रूप में सामने लाते हैं।*

जैसे- आज की घटना तो उदाहरण मात्र है।

निदर्शन- *बतौर दिखावा। जैसे- कम्पनी मैनेजर ने मुझे कई निदर्शन दिखाए, तब मैंने उसे पसन्द किया।*

· ***नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन, आशीर्वाद***

नमस्कार- *सम्मान के सम्मानार्थ नमस्कार शब्द का प्रयोग होता है। जैसे- मित्र वर्य्य!, नमस्ते, कब आये ?*

प्रणाम- *अपनों से बड़ों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते समय प्रणाम का प्रयोग होता है। जैसे-पण्डित जी, प्रणाम।*

अभिवादन - *विशिष्ट मान-मर्यादा। जैसे- किसी भी वर्ण के मान्य पुरुष अभिवादन के पात्र समझे जाते हैं।*

आशीर्वाद - *अपने से छोटों के प्रति आशीर्वाद का प्रयोग होता है। जैसे- आशीर्वाद राजन् ! कहिए कुशल तो है न ?*

· ***निन्दा, भर्त्सना, अपवाद, अपयश, कलंक***

निन्दा - *समाज में नैतिक सिद्धान्त के विरुद्धाचरण को प्रकट करने के गर्हित भाव की संज्ञा निन्दा है।*

जैसे अछूतोद्धार के विरोधी सनातनी पण्डित महात्मा गाँधी की निन्दा करते हैं।

***भर्त्सना**- अधिक, अनुचित काम, करने के कारण भर्त्सना होती है। जैसे- अपराधी को छोड़ने के कारण पुलिस इंस्पेक्टर की बहुत भर्त्सना हुई*

***अपवाद**- उन अनुचित आक्षेपों को, जिनसे समाज में निरापराध व्यक्ति-अपराधी सिद्ध हों, अपवाद कहते हैं।*

जैसे- भगवान् कृष्ण के सम्बन्ध में जन-समाज में अनेक अपवाद प्रचलित हैं।

***अपयश**- जब किसी सम्भ्रान्त पुरुष के चरित्र पर कालिमा लग जाने से उसकी बदनामी फैलती है तब उसको अपयश कहते हैं।*

जैसे- सीताहरण के प्रसंग से रावण का अपयश समाज में आज तक फैला हुआ है।

***कलंक** - किसी के सुन्दर चरित्र में जो मलिनता आ जाती है, उसकी संज्ञा कलंक की है।*

जैसे अपनी माता के मारने का कलंक परशुराम को लग ही गया।

· प्रेम, श्रद्धा, भक्ति, स्नेह, अनुराग, प्रणय, प्रीति, वात्सल्य

***प्रेम-** साधारणतः हृदय के आकर्षण का भाव प्रेम है। जैसे- भाई न जाने क्यों, तुमसे प्रेम होता जा रहा है।*

***श्रद्धा**- गुरुजनों के प्रति जो प्रेम होता है, वह श्रद्धा कहलाती है जैसे –*

'महिमा वेद-पुराण सबै बहुत भाँति बखानत,
यथा सहित सब करत सहित श्रद्धा गुण मानत।'
(केशव)

***भक्ति**- देवता में जो प्रेम होता है, वह भक्ति कहलाता है। जैसे- देव ! आप कृपया, मुझ दास को सर्वप्रथम अनुपावनी भक्ति दीजिए।*

***स्नेह**- छोटों से जो प्रेम होता है, वह स्नेह कहलाता है। जैसे- छोटों से स्नेह रखना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है।*

अनुराग- *प्रेम की विशेषता का नाम अनुराग है। जैसे-*

'नहीं निष्फल मेरा अनुराग।
सिद्धि है स्वयं साधना भाग।।'
(साकेत : ९ सर्ग; 300)

प्रणय- *स्त्री में जो प्रेम होता है, वह प्रणय है। जैसे- स्त्रियों का प्रणय-जाल विचित्र होता है। इसमें से निकल जाना बहुत कठिन है।*

प्रीत्ति- *स्नेह और प्रेम का पर्याय। जैसे भवभूति ने उत्तर राम चरितम् में स्नेह और प्रीति को एक ही अर्थ में प्रयुक्त किया है।*

वात्सल्य- *माता-पिता द्वारा किया जाने वाला स्नेह वात्सल्य है। जैसे- बहुत दिनों बाद बेटे को देखकर वात्सल्य उमड़ पड़ा।*

- ***प्रणाम, नमस्कार, अभिभवादन***

प्रणाम- *अपनों से बड़ों के प्रति की जाने वाली दण्डवत। जैसे- प्रातः काल प्रतिदिन अपने माता-पिता को प्रणाम करना ही मनुष्य का धर्म है।*

नमस्कार- *अपनी समता के लोगों से की जाने वाली नमस्ते। जैसे- अपने दोस्त को नमस्कार कहकर महेन्द्र ने विदा ली।*

अभिवादन- *किसी के प्रति विनम्र भाव सहित शारीरिक चेष्टाओं द्वारा (यथा हाथ जोड़ना, झुकना, चरण स्पर्श करना आदि) अथवा कहकर नमस्ते करने की क्रिया। जैसे- कार्यालय में पहुँचते ही उसने सब का अभिवादन किया।*

· ***प्रतिद्वन्द्विता, प्रतियोगिता, स्पर्द्धा***

प्रतिद्वन्द्विता- *जब मनुष्य किसी मलिन चित-वृत्ति से किसी का विपक्षी बनता है तब उसकी विपक्ष भावना को प्रतिद्वन्द्विता कहते हैं।*

इसमें जलन का भाव रहता है। जैसे- दमयन्ती को प्राप्त करने के लिए इन्द्र ने राजा नल से प्रतिद्वन्द्विता की थी।

प्रतियोगिता- *जब शुद्ध मनोवृत्ति से अपनी उत्तरावस्था प्रकट करने के लिए समाज में होड़ होती है और उसमें बिना किसी की बुराई किये अपनी उच्चता प्रदर्शित*

करने का उद्योग होता है तब उद्योग के भाव की संज्ञा प्रतियोगिता है। जैसे प्रिय मित्र! क्या तुम नहीं जानते, कल नये उम्मीदवारों की प्रतियोगिता-परीक्षा होगी।
***स्पर्द्धा** - मन की इच्छा, जो किसी से अधिक उन्नति करने की हो। जैसे- पूरे कक्षा के विद्यार्थियों में अधिक अंक अर्जित करने की स्पर्द्धा है।*

· ***भामिनी, कामिनी, प्रमदा, मानिनी, कान्ता, ललना, रमा, वामलोचना, कमलाक्षी, जाया, दारा, भार्या, पत्नी***

***भामिनी**- अधिक कोप करने वाली स्त्री का नाम है।*
***कामिनी**- काम-युक्त स्त्री का नाम है। जैसे- कामिनियों का संसर्ग मनुष्य को नष्ट कर डालता है।*

कोहि हेतु रानि रिसानी परसत पानी पतिहिं निवारई।
मानहुँ सरोष भुअंग भामिनी विषम भाँति निहारई।।
(तुलसी)

***प्रमदा-** बहुत कामवती स्त्री को कहते हैं।*
***मानिनी**- प्रणय-कोप वाली स्त्री को कहते हैं।*
***कान्ता**- मन-मोहित करने वाली स्त्री को कहते हैं।*
***ललना**- दुलारी स्त्री को कहते हैं।*
***रमा**- विहार के योग्य स्त्री का नाम है।*
***रमणी**- जिसमें अति चित रमित हो।*
***वाम लोचना** - सुन्दर नेत्रवाली स्त्री का नाम है।*
***कमलाक्षी**- कमल के सदृश्य सुन्दर, विशाल खिले हुए, अरुण नेत्रवाली स्त्री को कहते हैं।*
***जाया, दारा, भार्या, पत्नी-** ब्याही हुई स्त्री को कहते हैं।*
***विशेष द्रष्टव्य**- विशेषणों के उपयोग से स्त्री-समुदाय के भेद असंख्य हैं जिसको चतुर जन उपमा द्योतक शब्दों की विशेषता से समझ सकते हैं।*

· ***भय, डर, आशंका, शंका***

भय- *डर की कोई वस्तु जब अपना प्रभाव हृदय पर जमा लेती है तब हृदय की उस अवस्था की संज्ञा भय है।*

डर- *जब बाहरी वस्तु किसी हानि की आशंका से हमें भयभीत करती है तब वह डर की वस्तु समझी जाती है।*

जैसे- राजन् ! शान्त हो जाओ घबराओ नहीं, यहाँ किसी का डर नहीं है।

आशंका- *जब हानि की सम्भवाना से किसी भय का अनुमान किया जाए; भय निश्चयावस्था में न हो, तब उसको आशंका कहते हैं। आशा के प्रतिकूल अर्थ में उस प्रकार की मानसिक स्थिति को बतलाने के लिए आशंका का प्रयोग होता है। जैसे- मुझे भारी आशंका है कि कहीं फिर पाकिस्तान से महाभारत न छिड़ जाए।*

शंका- *निश्चिय तथ्यों के सम्बन्ध में मन में उठने वाली जिज्ञासा और उत्कंठा शंका कहलाती है। जैसे भोजन कम पड़ने की शंका हमें पहले ही हो गयी थी।*

· ***भ्रम, प्रमाद, त्रुटि, धोखा, भ्रान्ति, विभ्रम***

भ्रम- *असावधानी से वास्तविकता का बोध न हो सकना जिसका जल्द ही निवारण हो जाता है भ्रम हैं।*

जैसे पिता जी! कल मुझे उस बाग के पास एक प्रेत का भ्रम हो गया था।

प्रमाद- *मूर्खता तथा ममता से जहाँ भ्रान्ति होती है, उसका नाम प्रमाद है।*

जैसे- तिष्यरक्षिता का प्रमाद बेचारे, कुणाल के लिए विशेष कष्टकर सिद्ध हुआ।

त्रुटि *- वास्तविक स्थिति से दूर। जैसे अपनी त्रुटियों से शिक्षा ग्रहण करना बुद्धिमत्ता का लक्षण है।*

धोखा *- वास्तविकता छिपा कर दूसरे रूप में प्रदर्शन धोखा है। जैसे- धोखा देकर वह रफूचक्कर हो गया।*

नोट *: भ्रम अनजाने में होता है जबकि धोखा जानबूझकर किया जाता है।*

विभ्रम- *मानसिक दुर्बलता के कारण कुछ का कुछ समझ लेना विभ्रम कहलाता है।*

जैसे अधिक उम्र हो जाने के कारण दादा जी को विभ्रम हो जाता है।

· ***भाषण, अभिभाषण, व्याख्यान, प्रवचन***

भाषण- *किसी समूह के सम्मुख अपने विचारों को व्यक्त करना।*

जैसे- अध्यक्ष पद के उम्मीदवार ने अपने भाषण को ओजस्वी बनाने की चेष्टा में अनर्गल प्रलाप किया।

अभिभाषण- *विशिष्ट महत्व के अवसरों पर होने वाला भाषण। जैसे- स्वतन्त्रता दिवस पर प्रधानाचार्य का अभिभाषण उच्चकोटि का रहा।*

व्याख्यान- *विद्वतापूर्ण वक्तृता के लिए व्याख्यान किया जाता है। जैसे- विश्वविद्यालय में व्याख्यान का स्तर गिरता जा रहा है।*

प्रवचन- *धार्मिक विषयों पर किया जाने वाला भाषण प्रवचन कहलाता है।*

जैसे- पुलिस ने अपनी जाँच में पाया कि आसाराम बापू प्रवचन की आड़ में काफी कुकृत्य में लिप्त रहे।

· ***मृत्यु, निधन, मर्त्य***

मृत्यु- *किसी जीव या प्राणी के जीवन का अन्त। जैसे- सड़क, दुर्घटना में गोपाल की मृत्यु हो गई।*

निधन- *बड़े और महत्व के लोगों की मृत्यु के सम्बन्ध में उनके प्रति विशिष्ट आदर या श्रृद्धा सूचक शब्द।*

जैसे- लम्बी बीमारी के बाद आज जय प्रकाश नारायणजी का निधन हो गया।

मर्त्य- *नश्वर, मरने वाला। जैसे- यह ध्रुव सत्य है कि प्रत्येक प्राणी का शरीर मर्त्य है।*

· ***मित्र, सखा, सुहृद, बन्धु***

मित्र- *किसी भी अवस्था का कोई व्यक्ति घनिष्ट होने पर मित्र कहलाता है।*

जैसे- *भक्तवत्सल राम ने बालि के अत्याचारों से व्याकुल सुग्रीव को अपना मित्र बना लिया।*

सखा- *समवयस्क होने के कारण जो स्वाभाविक प्रेम होता है, वह सखा की कोटि में आता है। जैसे- सुदामा कृष्ण का सखा था।*

सुहृद- *जिस व्यक्ति का स्नेह वासना-रहित होता है, जो सदा शुभाकाँक्षी तथा संवदेनशील रहता है, वह सुहृद कहलाता है।*

जैसे- जटायू राम का सुहृद था।

· ***मूल्य, मूल्यांकन, मूल***

मूल्य- *कीमत। जैसे- साइकिल का पूरा मूल्य आज प्राप्त हो गया।*

मूल्यांकन- *किसी वस्तु की उचित कीमत आँकना। जैसे- नगर महापालिका की ओर से मकानों का नया मूल्याँकन किया जा रहा है।*

मूल- *जड़। जैसे- इस झगड़े के मूल में जायदाद संम्बन्धी विवाद है।*

· ***मन, चित्त, मानस, हृदय, अन्तःकरण***

मन- *जिस शक्ति के द्वारा मनुष्य किसी बात को स्मरण रखता है, उस शक्ति का नाम मन है। जैसे सम्प्रति, मेरे मन की शक्ति क्षीण होती जा रही है।*

चित्त- *जिस ज्ञानेन्द्रिय द्वारा किसी विषय की जानकारी होती है, उस चेतन शक्ति का नाम चित्त है। जैसे आपकी चित्त की अवस्था आजकल कैसी है?*

मानस- *इच्छा-मय ज्ञानेन्द्रिय की संज्ञा मानस है। जैसे- मेरे मानस में तुम्हारी ही इच्छा का साम्राज्य हो, ऐसी मेरी उत्कट अभिलाषा है।*

हृदय- *अनुभव करने वाली ज्ञानेन्द्रिय का नाम हृदय है। जैसे- मेरे हृदय-मन्दिर में तुम्हारी श्यामली मूर्ति का आभास कब होगा नाथ !*

अन्तःकरण- *वाह्य इन्द्रियों से सम्बन्ध न रहने पर हृदय का नाम अन्तः करण हो जाता है।*

जैसे- जब तक वाह्य इन्द्रियाँ शान्त नहीं होतीं तब तक श्याम सुन्दर की झलक अन्तःकरण के पटल पर कादपि नहीं आ सकती।

· ***युक्ति, तर्क, वाद, वितण्डा-जल्प***

युक्ति- *कार्य का हेतु दिखाना युक्ति है। जैसे- अरे भाई! कुछ युक्ति तो बताओ, जिससे मेरा मनोरथ सिद्ध हो।*

तर्क - *युक्ति की कसौटी तर्क है। जैसे- निशा! ईश्वर तर्क से रहित है (अस्तु हमारे ऋषियों ने उसे अतर्क कहा है।)*

वाद- *किसी निर्णय पर पुहँचने के लिए युक्ति-प्रयुक्ति वाद है। जैसे- क्या, वाद-विवाद कर रहे हो, जाने दो !*

वितण्डा-जल्प- *स्वपक्ष-स्थापन तथा पर-पक्ष-निराकरण कथा-विशेष को वितण्डा तथा जल्प कहते हैं।*

जैसे- तुम्हारे इस वितण्ड से मेरा पक्ष खण्डित (निर्बल) नहीं हो सकता।

· ***यात्रा, भ्रमण, पर्यटन, सैर, विहार, अभियान***

यात्रा- *अपने रहने के स्थान से दूर स्थान को जाना। जैसे- दीपावली पर लोग चित्रकूट धाम की यात्रा करते हैं।*

भ्रमण- *किसी विशेष उद्देश्य से यात्रा करना जिसका कार्यक्रम निश्चित होता है।*

जैसे जल विद्युत के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए छात्रों का एक दल भ्रमण पर गया है।

पर्यटन- *मुख्यतः सैर-सपाटा और विभिन्न स्थानों के दृश्य देखने अथवा उनसे परिचित होने के उद्देश्य से होता है।*

जैसे- कुम्भ मेले में बहुत से विदेशी पर्यटक प्रयाग आये थे।

सैर- *किसी अच्छे स्थान की शोभा देखकर मन बहलाना और अवकाश का समय व्यतीत करना। जैसे गर्मियों में छुट्टी बिताने के लिए लोग पहाड़ पर सैर को चले जाते हैं।*

विहार- *व्यस्त जीवन से कुछ समय निकाल कर मनोविनोद एवं मन बहलाव के उद्देश्य से किया गया सैर विहार कहलाता है।*

जैसे- अपने व्यस्त जीवन से समय निकाल कर मैं अक्सर नौका विहार करता हूँ।

अभियान- *अभियान सैन्य ढंग की निश्चित उद्देश्य से पूरे दल-बल सहित की गई एक विशिष्ट यात्रा है।*

जैसे- अण्टार्कटिका पर भारत ने कई सफल अभियान सम्पन्न किये हैं।

· ***रात, तमिस्रा, राका***

रात- *सूर्य के अस्ताचल में छिप जाने पर चारों ओर अन्धकार छा जाता है। उदयाचल से निकलने पर प्रकाश हो जाता है। जब तक सूर्य अस्ताचल में छिप जाने के बाद उदयाचल पर दिखायी नहीं देता तब तक की संज्ञा रात है। जैसे- उल्लू को रात में ही दिखता है।*

तमिस्रा- *घोर काली रात्रि का नाम तमिस्रा है। जैसे- तमिस्रा में चोरी का डर अधिक होता है।*

राका- *जिस रात में पूर्ण चन्द्रमा विद्यमान रहता है, उसे राका कहते हैं। जैसे- राका की शोभा राका पति पर निर्भर है।*

• ***वर्ग, संघ, राशि, निकाय***

वर्ग- *जो जीव-अजीव एक ही जाति के समूह के हों वे एक वर्ग के कहलायेंगे।।*

संघ *- केवल प्राणियों के समूह को कहते हैं।*

राशि- *अन्नादि के ऊँचे ढेर को राशि, पुंज, कूट कहते हैं।*

निकाय *- धर्म-परायण पुरुषों के समूह का नाम निकाय है।*

· ***वायु, पवन, समीर***

वायु- *अनके प्रकार की गैसों का ऐसा मिश्रण जो हमें दिखायी नहीं देता, और पृथ्वी पर हर जगह व्याप्त है। यही तत्त्व श्वसन क्रिया में अन्दर फेंफड़े तक बराबर आता-जाता रहता है। जैसे- आक्सीजन गैस को कभी-कभी लोग प्राण वायु भी कहते हैं।*

पवन- *शरीर के स्पर्श मात्र से हमें जिसका ज्ञान होता है। जैसे- न जाने ये ठण्डी पवन कहाँ से आ गयी, अब तो गर्मी से कुछ छुटकारा मिलेगा।*

समीर- *जब पवन ताजे और स्वच्छ रूप में बहुत धीरे-धीरे चलती है और अपनी साधारण शीतलता के कारण प्रिय या मधुर मालूम पड़ती है तब इसे समीर कहते हैं। जैसे- प्रातः काल आज बहुत ही सुहानी समीर बह रही थी।*

· ***विलाप, विसूरना, विलखना***

विलाप - *दुःख-भरी बातें कहते हुए रोने का नाम विलाप है।*

विसूरना- *सुबुक-सुबुक (सिसक-सिसक) कर रोने का नाम विसूरना है।*

विलखना- *देह की दशा भूलकर चीख मार कर रोने का नाम विलखना है। जैसे-*

'दुख प्रकाशन का क्रम नारि का, अधिक था नर के अनुसार ही।
पर विलाप, कलाप, विसूरना, विलखना, उनमें अतरिक्त था।।'

· ***विप्र, ब्राह्मण, द्विज***

विप्र- *जो यजन-याजन आदि कर्म पूर्ण रीति से कराता है, वह विप्र है।*

ब्राह्मण- *जो ब्रह्मा को जानता है, वह ब्राह्मण है।*

द्विज- *दो बार संस्कार प्राप्त मनुष्य द्विज है।*

· ***शंकर, रुद्र, नीलकण्ठ, आशुतोष, दिग्वसन, मदनारि***

शंकर - *भगवान का यह नाम, कल्याण करने के कारण पड़ा है। भक्त जन कल्याण की इच्छा से ही भगवान को शंकर नाम से स्मरण करते हैं।*

रुद्र- *भगवान जितने दायालु हैं, उतने ही कठोर भी। दृष्टों का दमन करते समय उनका सुन्दर स्वरूप भीषणता के रूप में परिणित हो जाता है।*

नीलकण्ठ- *देवताओं तथा सभी प्राणियों सबकी रक्षा के लिए भक्त वत्सल भगवान शंकर ने हलाहल का पान किया और विष अपने कण्ठ में रख लिया जिसके कारण इनका नाम नीलकण्ठ पड़ा।*

आशुतोष - *भक्तों पर शीघ्र प्रसन्न हो जाने के कारण भक्त-जन इन्हें आशुतोष नाम से पुकारते हैं।*

दिग्वसन - *भगवान् बहुत बड़े त्यागी हैं नंगे रहने के कारण यह नाम पड़ा जान पड़ता है। इस नाम से त्यागशीलता का बोध होता है।*

मदनारि- *कामदेव को जलाने के कारण यह नाम पड़ा। भक्त-जन वासनाओं, विशेषकर काम को नष्ट करने की इच्छा से इस नाम का जाप करते हैं। इस नाम से भगवान् की अलौकिक शक्ति, इन्द्रिय-निग्रह आदि का बोध होता है।*

· शाश्वत, स्थित, स्थिर

शाश्वत- *वह वस्तु जो नष्ट न हो सके। जैसे- प्रकृति के नियम शाश्वत हैं।*

स्थित- *स्वयं की जगह पर ही खड़ा हुआ। जैसे आगरा में स्थित ताजमहल शाहजहाँ की बेगम मुमताज महल की याद को आज भी बनाए हुए है।*

स्थिर- *जो अपने विचारों से न हटे। जैसे स्थिर विचारों के पुरुष ही अपने उद्देश्यों तक पहुँचने में सफल होते हैं।*

· शासन, प्रशासन, अनुशासन

प्रशासन- *शासन कार्यों का संचालन करना। जैसे- प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली में प्रशासनाधिकारी को मन-मानी करने की छूट नहीं होनी चाहिए।*

अनुशासन *- संयमित शासन। जैसे- विद्यालय के प्रधानाचार्य अपने छात्रों को अनुशासित रखते हैं।*

शासन- *आदेश तथा राज करना। जैसे ब्रिटिश शासन में भारत का आर्थिक शोषण ही हुआ।*

· शहर, ग्राम, कस्बा

शहर- *कस्बे से बड़ा शहर होता है। शहर का प्रबन्ध म्युनिसीपालिटी द्वारा होता है। बड़े-बड़े शहरों का प्रबन्ध कॉरपोरेशन की सहायता से होता है।*

ग्राम- *जहाँ अधिक बस्ती न हो, सब को स्वच्छन्दता पूर्वक शुद्ध हवा मिल सके वह ग्राम कहलाता है।*

कस्बा *- ग्राम से बड़ा कस्बा कहलाता है। कस्बा का प्रबन्ध चेयरमैन और पंचों की सहायता से होता है।*

· ***श्रम, आयास, परिश्रम***

श्रम- *शरीर के अंगों जैसे हाथ-पैर से कार्य करने को श्रम कहते हैं। श्रम से शान्ति मिलती है। जैसे शरीर के प्रत्येक अंगों को पुष्ट करने के लिए श्रम की विशेष आवश्यकता है।*

आयास- *केवल मानसिक शक्ति से कार्य करने का नाम आयास है। इससे आनन्द प्राप्त होता है।*

जैसे योगी जनों को अपने ज्ञान की वृद्धि के लिए आयास की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी गृहस्थों को अन्न की, जल की तथा वस्त्र की है।

परिश्रम- *श्रम की विशेषता को विद्वान लोग परिश्रम कहते हैं - जैसे- अत्यधिक परिश्रम से मनुष्य का स्वास्थ्य बिगड़ जाता हैं।*

संकोच, लज्जा, ग्लानि

संकोच - *जब मनुष्य का हृदय उदार नहीं होता, उसमें कुछ बनावट की मात्रा अधिक होती है, हृदय की इस अनुदार प्रकृति को संकोच कहते हैं।*

जैसे- भाई खाने-पीने में संकोच करना तुम्हें शोभा नहीं देता।

लज्जा- *जो भाव उपयुक्त विवेक और शील की विरुद्धता पर वृत्तियों को नम्र होने को बाध्य करता है, उसे लज्जा कहते हैं।*

जैसे- अनुचित कार्य पर सब को लज्जा आनी चाहिए।

ग्लानि- *किसी बुरे कार्य को करने के बाद शर्म आना। जैसे- मोहन ने चोरी के आरोप में पकड़े जाने पर ग्लानि से आत्म हत्या कर ली।*

· ***सहज, सरल, सुगम***

सहज- *सहज का शब्दिक अर्थ है, स्वभावतः प्राप्त होने योग्य। जिस वस्तु को हम अपने स्वभाव से ही सिद्ध देखते हैं, उसे सहज कहते हैं।*

जैसे- सहज कृपण सन सुन्दर नीति।

(सुन्दर काण्ड)

सरल- *जब किसी वस्तु में कठिनाई नहीं पायी जाती तब उसे सरल कहते हैं। सहज में स्वाभाविकता होती है, किन्तु सरल में कठिनाई-शून्यता का भाव रहता है। जैसे- यह प्रश्न तो बड़ा सरल है।*

सुगम- *जब किसी विषय में आनन्दपूर्वक बिना कष्ट के गमन करने का भाव दिखलाया जाता है, तब उसको सुगम कहते हैं।*

जैसे- भाई ! अब आपके विचारों के तह तक पहुँचना सुगम हो गया है।

संशय, अनिश्चय, असमंजस, सन्देह, भ्रान्ति (भ्रम)

संशय- *विश्वास का अभाव। जैसे उसके द्वारा किये गये कार्य के प्रति मेरे मन में अभी भी संशय बना हुआ है।*

अनिश्चय- *जहाँ पर निश्चय करना असम्भव हो। जैसे- समाज के लोगों में अभी भी अनिश्चय की स्थिति बनी हुई है।*

असंमजस - *विकट प्रसंग या समस्या के सामने आने पर कुछ भी निश्चय न कर पाना।*

जैसे भारी मात्रा में अवैध मतदान के प्रयोग से उम्मीदवार असमंजस में पड़ गये।

सन्देह- *मस्तिष्क के अनिश्चय की स्थित में जहाँ कोई ठोस आधार या कारण नहीं मिल पाता सन्देह शब्द का प्रयोग किया जाता है।*

जैसे- प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करने को लेकर उसके मन में अभी भी संदेह बना हुआ है।

भ्रान्ति- *किसी वस्तु या बात को कुछ का कुछ समझ लेना। जैसे- आतंकवाद की समस्या पर हुई बात-चीत ने गृह मंत्री को भ्रान्ति में डाल दिया है।*

· ***संतोष, तोष (तुष्टि), तृप्ति***

संतोष- *इसमें जो कुछ अपने पास होता है या सहज में मिल जाता है, उसी से मनुष्य निश्चिन्त और प्रसन्न रहता है।*

जैसे- बच्चों को खिलौना दिलाकर आज मुझे बहुत संतोष मिला है।

तोष (तृष्टि) - यह तुष धातु से बना शब्द है जिसका अर्थ शान्त, स्थिर होना या किसी से प्रसन्न होना है।

जैसे- इच्छानुसार काम हो जाने पर मन स्थिर एवं शांत हो जाता है तथा तोष गुण की प्राप्ति होती है।

तृप्ति- इच्छापूर्ति से होने वाला क्षणिक संतोष। जैसे- इस गर्मी में एक गिलास ठण्डा पानी पीने से मेरी इच्छा तृप्ति हो गई।

· संवाद, परिसंवाद, विवाद

संवाद - नाटकों तथा उपन्यासों में पात्र परस्पर जो बातचीत करते हैं उसे ही संवाद कहते हैं। जैसे- संवाद-कुशल नाटककार अपने पात्रों को अपूर्व आकर्षण से युक्त कर देता है।

परिसंवाद - एक ही विषय को लेकर विभिन्न वक्तागण अपने-अपने विचार व्यक्त करते हैं, उसे परिसंवाद कहते हैं।

जैसे- जिन्होंने बहुत दिनों से सोचना छोड़ दिया है, परिसंवाद में ऐसे विख्यात और लब्ध प्रतिष्ठ विचारकों को आमंत्रित करना ठीक नहीं है।

विवाद - किसी समस्या पर तर्क-वितर्क करना। जैसे- नियंत्रण रेखा को लेकर भारत-पाक सीमा के मुद्दे पर विवाद बना हुआ है।

· ज्ञान, बुद्धि, धी, मति, प्रज्ञा, परिज्ञा

ज्ञान- किसी विषय को भली प्रकार जानना ज्ञान है। जैसे- स्वामी योगीश्वर चन्द्र का ज्ञान सूक्ष्म जगत् में अधिक है।

बुद्धि - मन की ठीक वृत्ति का नाम बुद्धि है। जैसे- बुढ़ापे में आपकी बुद्धि सठिया गयी है।

धी- विचारक शक्ति का नाम धी है। जैसे नाथ ! मेरी धी शक्ति की वृद्धि कीजिए।

मति- इच्छा करने की कोशिश का नाम मति है। जैसे- आपकी मति मारी गयी है जो जीवन की मृग मरीचिका में फँसे हैं।

प्रज्ञा- *प्रज्ञा में बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का समावेश होता है। जैसे- प्रज्ञा में उसकी कोई सानी नहीं है।*

परिज्ञा- *जीव, आत्मा, ईश्वर, माया के विषय में जानकारी परिज्ञा है। जैसे- परिज्ञा की परिधि में ईश्वर, जीव, जगत सभी आते हैं।*

· ***भाग, खण्ड, अंश***

भाग- *बड़ी वस्तु का एक टुकड़ा 'भाग' कहलाता है। जैसे-इस खण्ड काव्य के कई भाग हैं।*

खण्ड- *मूल वस्तु से जब कोई भाग अलग हो जाता है तब उसे 'खण्ड' कहते हैं जो अपने आप में लगभग पूर्ण इकाई होता है।*

जैसे- यह पुस्तक तीन खण्डों में विभाजित है- भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं जीव विज्ञान।(नोट - भाग खण्ड से छोटी इकाई है।)

अंश *- सामान्यतः अंश मूल वस्तु की बहुत छोटी इकाई है। जैसे- कर्मचारी चयन आयोग परीक्षा में अपठित गद्य का जो अंश व्याख्या के लिए दिया था*

वह बहुत क्लिष्ट था।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR